उदय प्रकाश की कहानियों में बदलती आधुनिक परिस्थितियाँ

भावना परमार
रिसर्च स्कोलर, गुजरात युनिवर्सिटी, अहमदाबाद

आज वैश्वीकरण से प्रभावित इस भारत वर्ष में विश्व के सामने कई चुनोतियाँ उभरकर आई है । इस प्रभाव ने साहित्य को भी आपे में किया है । इस आधुनिकरण एवं भौतिक सुख साधन के कारण मनुष्य के मानवीय मूल्य, परंपरा, सांस्कृतिक धरोहर सम्मान, नैतिक मूल्य, आदि किसी अन्य दिशा की और विखरती जा रहे हैं ।

वैश्वीकरण की पाश्चात्य चकाचौंध के कारण भारतीय समाज में विविध प्रकार की समस्याएँ सर उठाएँ खडी हैं । आज आधुनिक दौर में विकास के नाम पर प्रगति, नयी योजनाएँ, परिकल्पनाएँ बढती गयी हैं । किन्तु इसके पीछे कहीं न कहीं मनुष्य में स्वार्थ, लोभ, हिंसा, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, असंतोष की भावना की उतनी ही तेजी से दिखाई दे रही हैं ।

समाज के बाजारीकरण का प्रभाव बढता जा रहा हैं । बाजारी करण कके कारण लोगों में स्पर्धात्मक आवेगों का विकास हुआ है । ऐसे माहोल के कारण मनुष्य में स्वार्थ, कोम्पीटीशन, दगा, द्वेष, कुटीलनीति, आदि अधिक मात्र में दिखाई पडती है । जहाँ ग्रामीण, महानगरीय, जन-जीवन इसके शिकंजे में फँसता जा रहा है । ऐसे विसंगत माहोल के कारण लोगों में धर्म, परंपरा, विश्वास, आस्था, आध्यात्मिक मूल, आदर्श जाति पलायन हो जा रहे है । २१ वी सदी के साहित्यकारोंने इस वैश्वीकीकरण से उत्थान हुए इस संघर्षों को अपने साहित्य का विषय बनाकर सचोट तौर पर पाठकों के समक्ष प्रकट किया है । इस नए साहित्यकारों में उदय प्रकाशजी का साहित्य एक नयी सोच एवं नयी दिशा को लक्षित करता दिखाई देता हैं । उन्होंने अपने साहित्य में ईन आधुनिकरण के कारण पनप रही विषमताओं को प्रकट किया है । इनकी प्रमुखतः रचनाएँ सामाजिक संघर्षों को प्रकट करती है ।

उदय प्रकाशजी की रचनाएँ सामाजिक कुरीति, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, लोभ, लालच, ठगनेवालों की नियत आदि का पर्दाफाश करती है । उनकी 'पीली छतरीवाली लडकी' कहानी में उन्होंने समाज में शिक्षा के स्थान पर हो रहे भ्रष्टाचार को निरुपित किया है । भारतीय समाज में शिक्षा एवं ऐसा माध्यम हैं । जो बच्चों कके भविष्य का द्योतक है । उन्होंने शिक्षा के नाम पर लगे कलंक को प्रकट किया है । इस कहानी में शिक्षा एक भ्रष्ट नीति का शिकार है । शिक्षा की सम्पूर्ण परिभाषा वहाँ बदलती दिखाई देती है ।

भारतीय समाज में शिक्षा एक सरस्वती का वाहक थी, शिक्षा संस्कार थी वो ऐसे भ्रष्ट सामाजिक माहोल में भ्रष्टता का शिककर बन गयी है । उदय प्रकाशजीने इस कहानी में ऐसी भ्रष्ट शिक्षा प्रणाली पर व्यंग्य किया है । शिक्षा की उँची-उँची ईमारतें जो संस्कार के सिंचन के लिए बनाई गई है । वहाँ केवल भ्रष्टता,कुरीति, व्यभिचार, लालच चलता है । आज शिक्षा केवल पैसों की खनक पर ही तय होकर रह गयी है ।

शिक्षा के स्थान पर कार्य करनेवालों कुलपति, आचार्य, शिक्षक आदि महोदय शिक्षा एवम् डिग्री के नाम पर, बच्चों के साथ घिनौना व्यवहार करते हैं । अध्यापन की सच्ची परिभाषा बदल गयी है । केवल स्वार्थ, लालच, बिगडी नियत आदि ही दिखाई पडती है । शिक्षा के स्थान पर लाग स्वार्थ, लालच को सम्पन्न करते हैं ।

'पीली छतरीवाली लडकी' कहानी में वह लडकी इन सारी विषमताओं को सामने लाने का प्रयास करती है। इस कहानी के माध्यम से उदय प्रकाश जी को आधुनिक शिक्षा, जगत प्रणाली की कमियों की त्रुटियों को खामियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है । डा. रमणिका गुप्ता लिखती है –

उनकी कहानियाए सामाजिक बदलाव लाने का आहवान करती है ।
इन कहानियाए में आक्रोश है,
आग है, गुस्सा है,
तो साथ-साथ संवेदना
मानवीयता और सब्र भी है ।

उदय प्रकाशजी की 'दिल्ली की दिवारें' कहानी में भी कोलगर्ल, वैश्यागीरी के नाम पर समाज में व्याप्त यौन शोषण को व्यक्त किया गया है । आज आधुनिक महानगरों में पाश्चात्य संस्कृति से आए हुए दुषण हर जगह फैलते नजर आ रहे है । समाज सेन्टर, ब्युटीपार्लर के नाम पर वैश्यागीरी एवं कोलगर्ल सेन्टर चल रहे है । उनकी इस कहानी में इसी बात का पर्दाफाश किया गया है । महानगरों में खुले हुए मसाज सेन्टर एवं ब्युटीपार्लर में अधेड उम्र के रईस मसाज के बहाने उन लडकियों का उपयोग भी कर लेते है । ये दुषण इतना फैला है कि यहाँ तक की सरकारी अफसर एवं पुलिसवाले अधिकारी भी ऐसी गंदी आदतों के गुलाम हैं ।

इस कहानी की स्त्री चरित्र सुनीता नाम की लडकी है । जो पाँच हजार रुपए में ऐसा काम कर लेती है । नारी अपनी मर्जी से ये घिनोना काम करती हो, या बीना मर्जी के किन्तु ये गंदी आदत या यूं कहे कि ये दूषण समाज की नीवं को और ज्यादा खोखला बनाते जा रहे हैं । निष्कर्षत: उदय प्रकाश जी ने इस पश्चिमि चका-चौंध के कारण पनप रही सामाजिक बिमारीयों को अपनी कहानियों में प्रकट किया है । आज पाश्चात्य संस्कृति के साथ में भारतीय संस्कृति परंपरा कही बिछडती जाती दिखाई देती है ।

आधुनिक चकाचौंध में मनुष्य को स्वयं का मान नहीं रहा । मनुष्य स्वयं क्या है ? उसे क्या करना है । मानवी का मूल्य क्या है । इन सारी बातों को भूलाकर वह किसी और दिशा में आगे निकल गया है । यहाँ तक की सामाजिक, नैतिक मूल्यों को भूलकर अनैतिक भ्रष्टता, रिश्वतखोरी, लोभ, लालच आदि के शिकंजे में फँसा जा रहा है ।

उदय प्रकाशजी की ऐसी कई रचनाएँ सामाजिक धरातल के यथार्थ का निरुपण करती है । शिक्षा और व्यापार के नाम पर व्याप्त पाखंडो को उजागर करती है । उदय प्रकाशजी की 'मोहनदास' कहानी में भी इसी बात की गंभीरताओं को प्रकट किया गया है । जहाँ शिक्षा प्रणाली पहले परंपरागत सच्चाई एवं डिग्री के बलबूते पर चलती थी वो आज केवल लाँच, रिश्वतखोरी, लागवग और पैसों के दम पर चलती है । इस कहानी का नायक गोल्ड मेडालिस्ट होते हुए भी नोकरी की तलाश में दर-ब-दर ठोकरे खाता भटकता दिखाई दे रहा है । जबकि पास क्लास वाले युवक रिश्वत देकर उँचे पदों पर आसीन बैठते हैं । आज नौकरी अपने दम पर नहीं मिलती किन्तु पैसों के वजन पर तौली जाती है । बहरहाल आज की सामाजिक परिस्थितियाँ बिलकुल विपरित दिशाओं की और बढती जा रही हैं ।

उदय प्रकाशजी ने अपनी रचनाओं में इसी बदलते सामाजिक परिवेश की छाया में मनुष्य मन भी बदलता जा रहा हैं । भारतीय परंपरा को पीछें छोडकर मनुष्य पाश्चात्य प्रभावों से प्रभावित होकर नई-नई कुरीतियाँ, कुनीतियाँ अपनाता जा रहा है ।

संक्षेप में कहे तो आज का सामाजिक जीवन, वैश्वीकीकरण से फलिभूत बाजारीकरण, फास्ट लाईफ, पाश्चात्य चकाचौंध के कारण पनप रही है, अंधाधुंधी का शिकार बनता जा रहा है । उदय प्रकाशजी की विवच्य कुछ कहानियों में यही संदर्भ पाठकों के समक्ष प्रकट होता है । भागमभाग भरी जिन्दगी में भौतिकवादी दृष्टि संबंधो की नींव को खोखला करते जा रहे है । मनुष्य सामाजिक, सांस्कृतिक नीति नियमों को भूलकर स्वार्थी एवं लालची बनता जा रहा है । उदय प्रकाशजी की कहानियों में सामाजिक जीवन की सच्चाईयों के रंग झलकते है । उनकी कहानियाँ समाज में घट रहे नंगे यथार्थ को पाठकों था के समक्ष रखती है ।